जहां बजती थी घंटियां वहां आज छाया है मातम

प्रमोत सेमवाल/भुवन शाह

पांडुकेश्वर गांव में मची तबाही, आवासीय भवन नदी के तेज बहाव में बहे

गोपेश्वर। छह माह तक बदरीविशाल की पूजा-अर्चना करने वाला पांडुकेश्वर गांव चुप्पी साधे हुए है। पल भर में अलकनंदा नदी और गांव के बरसाती गदेरे से तबाह हुआ पांडुकेश्वर गांव में सिर्फ और सिर्फ तबाही ही तबाही दिख रही है।

पांडुकेश्वर गांव के नीचे से कल-कल बहती अलकनंदा नदी कभी इतनी विकलाप रुप धारण करेगी, यह ग्रामीणों ने नहीं सोचा था। हमने जिस ग्रामीण से भी तबाही की रात का जिक्र किया, वे रोने लगे। इससे पहले हमें पांडुकेश्वर गांव तक जाने के लिए पैदल रास्ते नहीं मिले। जोशीमठ से डैय्या पुल और बलदौड़ा तक आईटीबीपी की बस में गए। यहां से सात किमी की पैदल दूरी तय कर पांडुकेश्वर गांव पहुंचे। गोविंदघाट में जो मंजर देखने को मिला वह दिल चीरने वाला था। चारों और बर्बादी के निशां, सिख व्यावसायी सामान को समेटने में लगे हुए थे। हम यहां से सीधे आगे पांडुकेश्वर गांव पहुंचे। यहां छह माह तक भगवान बदरीनाथ की पूजा-अर्चना होती है। ग्रामीणों के भवन आधे बहे, आधे जमीन के ऊपर झूल रहे हैं। यहां हमें ग्रामीण अरविंद शर्मा मिले। उनका आवासीय भवन अलकनंदा के बहाव में बह गया है। वे कहते हैं कि अब तो यहां के ऊंची-ऊंची चट्टानों से भी डर लगने लगा है। गांव के ऊपर से बदरीनाथ हाईवे गुजर रहा है। जो कई जगहों पर धंस गया है। हमने गांव के आपदाग्रस्त ग्रामीणों का हालचाल जाना। गांव की बुजुर्ग महिला महेषी देवी ने रोते-बिलखते रुंधे गले से बोला, हे बदरीनाथ क्या बिगाड़ी छौ हमुन तेरु, सालभर तेरी पूजा करदा, तू हमसे रुठी...., बुजुर्ग महिला के ये शब्द दिल पर चुभे। गांव में भी जगदीश मेहता, जगजीत मेहता और अवध भंडारी ने बताया कि उनके आवासीय भवन जमींदोज हो गए हैं। वे दूसरे के घरों में रात काटने को मजबूर हैं। राहत के नाम पर यहां कुछ नहीं पहुंचा है। प्रशासन ने फौरी तौर पर 27-27 सौ रुपये आपदा के दिए। पांडुकेश्वर गांव के पांडव मंदिर में हमने मत्था टेका। गांव से होकर हम पांडुकेश्वर बाजार में पहुंचे। यहां व्यावसायियों के चेहरे मुरझाए हुए थे। व्यावसायी हरीश हमें देखकर रोने लगा। उसने 16 जून की रात्रि को याद करते हुए रुंधे गले से कहा कि हमें विश्वास नहीं था कि हम अब बच पाएंगे। ऐसा प्रतीत हो रहा था, कि बदरीनाथ का संपूर्ण भाग प्रलय होकर नीचे की ओर आ रहा है। मूसलाधार बारिश में हम जंगल की ओर भाग गए। हम होश खो चुके थे। हमने दो रातें जंगल में ही काटी। पांच सौ तीर्थयात्रियों को भी हम अपने साथ जंगल में ले गए। जिससे वे सकुशल बच गए। इसके बाद बदरीनाथ की ओर गए। हम लामबगड़ से करीब चार किमी की दूरी तक पहुंचे तो मौसम खराब होने लगा। बारिश होने की डर से हम यहां से वापस गोविंदघाट की ओर निकल गए। उसके बाद आईटीबीपी के ट्रक से जोशीमठ के लिए निकल गए।